ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिंदी विश्वविद्यालय में 'शिक्षा में रामत्व एवं अमृतकाल में विजन फॉर विकसित भारत' पर हुई कार्यशाला

भारत की शिक्षा राम के चरित्र व त्याग से सम्पन्न होनी चाहिए : कुलपति प्रो. के. के. सिंह

वर्धा, 6 मई 2024: भारत की ज्ञान परंपरा को रामत्व के साथ जोड़ना चाहिए। राम के व्यक्तित्व और गुणों से सम्पन्न शिक्षा ही रामत्व है। जीवन को सफल बनाने के सारे गुण राम में उपस्थित हैं। भारत की शिक्षा में राम के चरित्र, शिक्षा, त्याग और व्यवहारिकता इन

गुणों से सम्पन्न होनी चाहिए। यह विचार कुलपति प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने व्यक्त किये। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं भारतीय शिक्षण मंडलयुवा आयाम, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'शिक्षा में रामत्व एवं अमृतकाल में विजन फॉर विकसित भारत' विषय पर सोमवार 6 मई को एक दिवसीय कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. सिंह बोल रहे थे। मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय संगठन मंत्री बी. आर. शंकरानंद ने मार्गदर्शन करते हुए कहा कि शिक्षा में कर्म के माध्यम से राम प्रतिष्ठित होने चाहिए। हमे ज्ञान शक्ति, अर्थ शक्ति और सैन्य शक्ति से विकसित भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए शिक्षा में गुणवत्ता, सभी के लिए आसान

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org

दूरभाष : +91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

शिक्षा, रामत्व, अनुसंधान और कौशल विकास इन पंच सूत्र पर काम करना चाहिए। उन्होंने स्वाधीनता का इतिहास से लेकर वर्तमान परिदृश्य पर भी चर्चा की। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. धरवेश कठेरिया, हिंदी साहित्य विभाग के अध्यक्ष, संयोजक प्रो. अवधेश कुमार एवं भारतीय शिक्षण मंडल के विदर्भ प्रांत मंत्री राकेश सिंगरु मंचासीन थे।

इस अवसर पर भारतीय शिक्षण मंडल की ओर से 'शिक्षा में रामत्व एवं अमृतकाल में विजन फॉर विकसित भारत' विषय पर आयोजित शोध-पत्र लेखन प्रतियोगिता के पोस्टर का विमोचन मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफेसर तथा कार्यशाला के सह-संयोजक डॉ. योगेन्द्र बाबू ने किया तथा डॉ. अभिषेक त्रिपाठी ने आभार माना। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी व शोधार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हिंदी विश्वविद्यालयात 'शिक्षणातील रामत्व आणि अमृतकाळातील व्हिजन फॉर विकसित भारत' या विषयावर कार्यशाळा संपन्न

भारताचे शिक्षण हे रामाचे चरित्र व त्यागावर आधारित असावे : प्रो. के. के. सिंह

वर्धा, 6 मे 2024: भारताची ज्ञान परंपरा रामत्वाशी जोडली पाहिजे. रामत्व म्हणजे रामाचे व्यक्तिमत्व आणि गुणांनी भरलेले शिक्षण. जीवन यशस्वी करण्याचे सर्व गुण रामामध्ये आहेत. भारतीय शिक्षण हे रामाचे चारित्र्य, शिक्षण, त्याग आणि व्यावहारिकता या गुणांनी अंतर्भूत असले पाहिजे. असे प्रतिपादन कुलगुरू प्रो. कृष्ण कुमार सिंह यांनी केले. महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय आणि भारतीय शिक्षण मंडळ-युवा आयाम, नागपूर यांच्या संयुक्त विद्यमाने आयोजित 'शिक्षणातील रामत्व आणि अमृतकाळातील व्हिजन फॉर विकसित भारत' या विषयावर सोमवार 6 मे रोजी एकदिवसीय कार्यशाळेचे अध्यक्ष म्हणून प्रो. सिंह बोलत होते. प्रमुख वक्ते म्हणून उपस्थित भारतीय शिक्षण मंडळाचे अखिल भारतीय संघटन मंत्री बी. आर. शंकरानंद मार्गदर्शन करताना म्हणाले की कृतीतून शिक्षणात राम असले पाहिजे. ज्ञानशक्ती, आर्थिक सामर्थ्य आणि लष्करी सामर्थ्य असलेला विकसित भारत बनवण्याच्या दिशेने आपण वाटचाल केली पाहिजे. विकसित भारताचे ध्येय साध्य करण्यासाठी आपण शिक्षणातील गुणवत्ता, सर्वांसाठी सुलभ शिक्षण, रामत्व, संशोधन आणि कौशल्य विकास या पाच तत्त्वांवर काम केले पाहिजे. स्वातंत्र्याचा इतिहास आणि वर्तमान परिस्थितीवरही त्यांनी चर्चा केली. यावेळी कुलसचिव डॉ. धरवेश कठेरिया, हिंदी साहित्य विभागाचे अध्यक्ष संयोजक प्रो. अवधेश कुमार आणि भारतीय शिक्षण मंडळाचे विदर्भ प्रांत मंत्री राकेश सिंगरू मंचावर उपस्थित होते.

याप्रसंगी भारतीय शिक्षण मंडळातर्फे "शिक्षणातील रामत्व आणि अमृतकाळातील व्हिजन फॉर विकसित भारत' या विषयावर आयोजित शोधनिबंध लेखन स्पर्धेच्या पोस्टरचे प्रकाशन करण्यात आले.

कार्यक्रमाचे संचालन शिक्षण विभागाचे सहायक प्राध्यापक व कार्यशाळेचे सहसंयोजक डॉ. योगेन्द्र बाबू यांनी केले तर आभार डॉ. अभिषेक त्रिपाठी यांनी मानले. राष्ट्रगीताने कार्यक्रमाची सांगता करण्यात आली. कार्यक्रमास विद्यापीठातील शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी व शोधार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.